Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:-

Models of Psychology

Existential Model.

(2) अस्तित्ववादी व्याख्या (Existential Explanation):- अस्तित्ववादी मनोविज्ञान द्वारा असामान्यता की दी गई व्याख्या को अस्तित्ववादी व्याख्या कहा जाता है। सचमुच में अस्तित्ववादी मनोविज्ञान यूरोपियन अस्तित्ववादी दर्शनशास्त्र का ही एक अपवृद्धि (outgrowth) है। ~~सचमुच~~ मे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में 'संसार-में-होना (being-in-the-world) अर्थात् व्यक्ति का संसार के साथ संबंध तथा अन्य लोगों के साथ उनकी सतत अनुक्रिया को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें सच्चे ढंग से रहने के लिए अपने नियमों के अनुसार संघर्ष करने की क्षमता पर भी बल डाला जाता है। जब व्यक्ति इस तरह की सतत अनुक्रिया तथा क्षमता में अपने आपको सक्षम नहीं पाता है तो इससे उसमें अपवर्तन (alienation) की स्थिति उत्पन्न होती है जो एक तरह का आध्यात्मिक मृत्यु (Spiritual Death) के समान होता है जिससे व्यक्ति को अपनी जिंदगी मे अर्थहीनता दिखाई देती है और वह मृत्यु के अवश्यंभाविता से काफी डरने लगता है। इस सबका परिणाम यह होता है कि उसमें मानसिक विकृति या असामान्यता विकसित हो जाती है। अस्तित्ववादी विचारधारा को में मुख्य रूप से रोलो मे (Rollo May), विक्टर फ्रैंकल (Victor Frankl तथा आर॰डी॰ लायंग (R.D. Laing) के विचार उल्लेखनीय है।

Scanned with CamScanner

रोलो मे (Rollo May) ने ही अमेरिका में अस्तित्ववादी संदर्भ (Existential perspective) को सबसे पहले बतलाया और वे एक महत्वपूर्ण अमेरिकन समर्थक के रूप में रहे। इनका कहना है कि जिन्दगी के तथ्य का सात्विक संदर्भ (ontological context) के बाहर कोई अर्थ नहीं होता है। सात्विक संदर्भ से तात्पर्य रोगी के वर्तमान जीवन (living self) तथा आत्मन् के चेतन (consciousness) के संदर्भ में होता है। मे के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में अपने अस्तित्व के लिए एक स्थायी आधार (stable foundation) का एक केन्द्र को सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है। जब इस केन्द्र को बाह्य बलों से धमकी मिलता है, तो इसमें व्यक्ति में असामान्यता (abnormality) विकसित होता है।

Next class.